तित्थयर ISBN-2277-7865

वर्ष 48 ।। अंक - तृतीय ।। अक्टूबर 2022

॥ जैन भवन ॥

JAIN BHAWAN
CALCUTTA

**We are thankful for the financial assistance given towards the online publication of our Journals from a well-wisher at California , U.S.A. .**

अनुक्रमणिका

1. **गौतम - गणधर या बुद्ध**

डा: लता बोथरा

आवरण पृष्ठ – सरस्वती प्रतिमा , फतेहपुर सीकरी , उत्तरप्रदेश

**Editorial Board –**

Dr.Narendra Parson

Dr.Sulekh Jain

Dr. Jitendra B. Shah

Prof.G .C.Tripathi

Shri Pradip Nahata (co-ordinator)

Jain Journal is accessible at our Website – www.jainbhawan.in

For articles , reviews and correspondence kindly contact –

Dr.Lata Bothra

Chief Editor

Mobile no-9831077309,

E mail –latabothra13@yahoo.com , latabothra@gmail.com

# गौतम - गणधर या बुद्ध

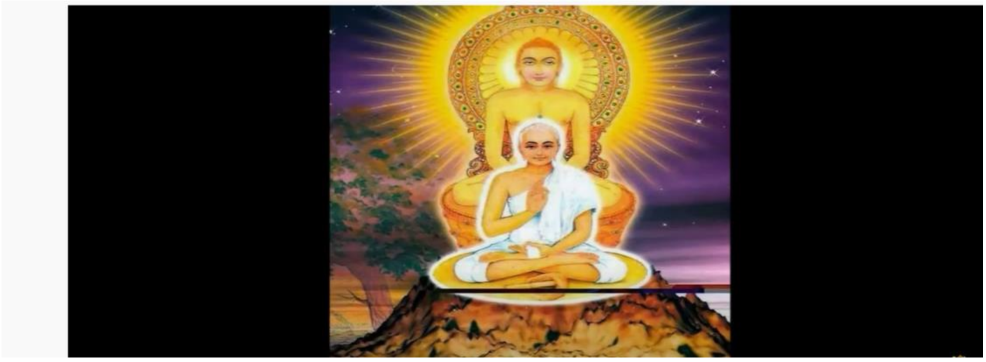

जिस सनातन श्रमण संस्कृति का प्रारम्भ आदिनाथ ऋषभदेव ने किया, 2600 वर्ष पूर्व वर्द्धमान महावीर ने उसमें वैदिक ऋषियों द्वारा आयी हुई भ्रान्तियों को दूर कर आदि श्रमण सनातन परंम्परा को पुनः जीवित करके चरम उत्कर्ष तक पहुँचा दिया ।वेदों का सही अर्थ समझा कर गौतम स्वामी का भ्रम दूर किया । तत्त्व द्दृष्टा महावीर ने कैवल्य प्राप्त कर विश्व को देखा जाना और समझा । उन्होंने तत्त्व दर्शन के साथ-साथ जीव जगत की गूढ़ समस्याओं का समाधान भी दे कर धर्म का युक्ति संगत मार्ग प्रशस्त किया । उन्होने वैदिक ऋषियों द्वारा आडम्बर और अलौकिकता से जकड़े समाज को एक ऐसी प्रभावी जीवन शैली का पथ दिखाय़ा जिस पर चल कर ही मानव जाति का उत्थान संभव है । लोगजन यज्ञ , मंत्र , चमत्कार आदि से उन्मुक्त होकर श्रम और पुरुषार्थ पर विश्वास करने लगे । उनके प्रभाव के विस्तार से भयभीत होकर पश्चिम से आये ब्राह्मणो और ऋषियों ने एक नयी नीति अपनायी जिससे सनातन श्रमण संस्कृति के प्रभाव को खतम किया जा सके । इसी कूटनीति के अन्तर्गत उन लोगो नें महावीर के समानान्तर उन्ही के प्रमुख शिष्य गणधर गौतम स्वामी को गौतम बुद्ध सजा कर प्रस्तुत किया I Professor Wilson's observations are as follows -- when Mahaviras fame began to be widely diffused it attracted the notice of the brahmins of magadh and several of their most eminent teachers undertook to refute his doctrine Instead of affecting their purpose ,however ,they became converts and constituted his gandharas heads of schools the discipled of Mahavira and teachers of his doctrine both orally and scripturally it is of some interest to notice them in detail , as the epithets given to them are liable to be misunderstood and to lead to erroneous notions respecting their characters and history . This is particularly the case with

the first indrabhuti of Gautam who has been considered as the same with the Gautama of the Buddha's,the son of suddhodana and mayadevi . आगे उन्होंनें लिखा है –That any connection exits between the Jains and Brahmin sage is , at least very doubtful, but the Gautame of the Buddhas, the son of Suddhodana and Maya , was a khatriya, a prince of the royal or warrior caste . All the Jain traditiond make their Gautam a bramin originally of the gotra, or tribe of the Gautam rishi adivision of Brahmins well known and still exixting in south of the India . These two person , therefore cannot be identified , whether they be historical orficticious personage .

शाक्य वंशीय आदित्य गोत्र के क्षत्रिय राजकुमार को गौतम कहना किसी भी प्रकार से मान्य नहीं हो सकता ऐसा क्यों हुआ, कब हुआ और किसलिये किया गया इसी गंभीर विषय पर साहित्यिक , शिलालेखिय और विदेशी भ्रमणकारियों के वृतान्तों पर आधारित यह संशोधन अब तक चली आ रही मिथ्या भ्रान्तियों को दूर करने की दिशा मे एक सार्थक प्रयास है ।

जैन और बौद्ध धर्म का भेद दर्शाते हुए पंडित नीलकंठ शास्त्री ने –उड़ीसा में जैन धर्म किताब में लिखा है – इसमें जहाँ एक ओर कठोर साधना और कर्म में अति निष्ठा का निषेध होता है तो दूसरी ओर भोग की यथेच्छाचारिता और अति स्वतंत्रता का निषेध भी है । मुनि का यही जैन धर्म या बौद्ध धर्म है । सम्राट अशोक ने सिर्फ इसी बौद्ध धर्म के नाम से संस्कारित जैन धर्म को स्वीकार किया था। - आगे वे लिखते हैं कि बौद्ध धर्म की प्राचीन शाखा हीनयान वास्तव में मूल जैन धर्म ही है ।

1) THE INDIAN RELIGIONS किताब में लिखा है - “The Jains originally pure Buddhists.’’ भारतीय श्रमण परम्परा में जिस भी महापुरुष को ज्ञान प्राप्त होता था उसे जिन , अर्हत और बुद्ध कहते थे । जैन और बौद्ध दोनो परम्पराओं में इन तीनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में प्रयोग हुआ है । भारत के बाहर विशेष कर तिब्बत और चीन में हमें यही परम्परा देखने को मिलती है । वहाँ पर तीर्थंकर, केवल ज्ञानी, तत्व ज्ञानी, आचार्य या साधारण ज्ञानी सभी को बुद्ध कहने की प्रथा है ।

2) यद्यपि आज महावीर के अनुयायी अनेक मतों में बँटे हुए हैं। अलग अलग आचार्यों की परम्परा में जो श्रावक हैं उनके लिये अपने आचार्य के उपदेश ही सर्वोपरि होते थे । पास से देखे तो यह अन्तर समझ आ जाता है लेकिन समय के अंतराल के बाद दूर से देखे तो यही लगेगा कि ये सब अलग अलग परम्परा के हैं ।चीनी परिव्राजक फाह्यान, ह्वेनसांग किस बुद्ध की खोज में भारत आये थे यह गहन संशोधन का विषय है । वे वैदिक ब्राह्मणों की इस कूट चाल से भ्रमित हो गये । फाह्यान जो सन् 400 ई. में भारत आया था उसने लिखा है कि उसके 1497 वर्ष पहले बुद्ध का निर्वाण हुआ था अर्थात 1097ई. पू. में । इसी प्रकार ह्वेनसांग ने लिखा है कि कुछ लोग कहते हैं कि बुद्ध के निर्वाण को 1200 वर्ष हुए हैं , कुछ के अनुसार 1500 वर्ष और कुछ 900 वर्ष बताते हैं ।इन भ्रमणकारियों के वृतान्तों ने भी भ्रमित किया है। भारत से जो हजारों की सँख्या में ग्रन्थ ये लोग लेकर गये और उनका जो अनुवाद किया चीनी भाषा में उसके कारण भी अनेक भ्रान्तियां उत्पन्न हुई । इनका पुनः अवलोकन आवश्यक है । इनके वर्णनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भिक स्तर पर जो एक जैसा था वह इन विदेशी परिव्राजकों तथा वैदिक ऋषियों के कारण कालान्तर में अलग अलग प्रतीत होने लगा ।इसी भ्रम के कारण परवर्तीकालीन इतिहासकारों एवं खोजकर्त्ताओं ने चीनी यात्रियों के विवरणों को आधार मान कर भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण तथ्यों की अवहेलना की परिणामस्वरूप भारतीय इतिहास के अनेक पृष्ट आज भी अनछुए हैं विशेष कर जैन इतिहास के।

3) जैन और बौद्ध दोनो साहित्य में वर्द्धमान महावीर और गौतम बुद्ध समसामायिक थे ऐसा उल्लेख मिलता है । एक ही समय में एक ही शहर के विभिन्न उद्यानों में वे थे । गृहपति उपाली तथा असि बंधक पुत्र ग्रामणी के प्रसंग पर दोनो नालंदा में थे । सिंह प्रसंग पर दोनों वैशाली में थे , अभय कुमार प्रसंग पर दोनों राजगृह में थे फिर भी दोनों के परस्पर मिलने या वार्तालाप का कोई वर्णन नहीं मिलता जो आश्चर्य और जिज्ञासा उत्पन्न करता है कि क्या कारण है इसका ।

4) तिब्बती साहित्य का अध्ययन करने पर पता चला कि वहाँ 25 बुद्धों का वर्णन मिलता है और पच्चीसवाँ बुद्ध गौतम को माना गया है । जैन परम्परा में 24 तीर्थकरों का वर्णन मिलता है जो बुद्ध भी कहे जाते हैं । महावीर के प्रथम गणधर गौतम थे अतः तिब्बती वौद्ध ग्रन्थो में उनको ही 25 वां बुद्ध कहा गया । तिब्बती साहित्य में GANGKARE TEASHI नामक किताब में श्रमण सनातन परम्परा के आदि नाथ ऋषभदेव के अलावा इसमें बाहुबली, भरत और भगवान् महावीर का वर्णन भी मिलता है तथा गौतम और महावीर को समकालीन बताया गया है । उनके परस्पर वार्तालाप भी होते थे इसका भी वर्णन किया गया है जो गणधर गौतम ही गौतम बुद्ध हैं इस बात को पुष्ट करता है ।

इस किताब के अनुसार ---

1) Before Buddha in this region jains were here

2) Digamber chear pu pa were here and they consider sky as their cloth . They believe in Paap-punya and theory of karma
>

3) Other chear pu pa covered their bodies with Goe Tsen (white clay )

4) Other Jains came later on with white cloths.

5) This religion is well before buddhism on this earth.

6) In the beginning Jain Lords were 24 .

7) The first God name is KHU ChOK (lord Rishabh nath—rushya nath )

8) The last God name is PHELWA

9) Lord Mahavira and Lord Buddha are in same period.

10) Both had interactions discussion about religion .

Our later authorities contributes many curious items and suggestive coincidences , tending more fully to establish the fact that Buddhism was substantially an offshoot of Jainism . for

example Anand is found in some passages of recognised authority directly addressing Gautam himself in his own proper person and speaking of the 24 buddhas who had immediately preceded him. (Spence Hardy,manual of Buddhism)

5) आदि परम्परा में सदियों प्राचीन एक महत्वपूर्ण परम्परा का निर्वाह आज भी देखने को मिलता है कि जब कोई आचार्य किसी बड़े नगर में चातुर्मास करते हैं तो उसी नगर के अन्य स्थानों पर उनके प्रमुख शिष्य भी प्रवचन देते हैं । प्रभु महावीर जब राजगृह के गुणशील चैत्य में प्रवचन देते हैं तो उनके प्रमुख शिष्य गौतम और सुधर्मा स्वामी भी नगर के अन्य स्थानों पर प्रवचन देते हैं । श्रेणिक राजा महावीर के पास जाते हैं और गौतम तथा सुधर्मा स्वामी के पास भी जाते हैं । इसी प्रकार आजातशत्रु भी महावीर के साथ साथ गौतम स्वामी के पास जाते थे। सुधर्मा स्वामी के पास भी जाने का उल्लेख मिलता है । महावीर के प्रति उनकी अनन्य भक्ति है वहीं उनके शिष्य गौतम और सुधर्मा स्वामी के भी प्रति सम्मान और भक्ति है । यही कारण है कि तत्कालीन सभी राजाओं का वर्णन भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध दोनों के प्रबल अनुयायी के रुप में मिलता है। यह होना असम्भव है कि एक ही राजा दोनों विरोधी धर्मों के एक ही समय में अनुयायी हो । वर्तमान युग में भी अनेकों आचार्यों के अनुगामी अनेक श्रावक होते हैं । यद्यपि सभी श्रावक सभी आचार्यों और मुनियों को वंदन करते हैं परन्तु किसी विशेष आचार्य के ऊपर उनकी भक्ति अधिक रहती है। शायद इसीलिये राजा उदायन , श्रेणिक , प्रद्योत, आजातशत्रु आदि राजाओं को दोनो परम्पराएँ अपना द्दढ़ उपासक मानती हैं क्योंकि गौतम बुद्ध और गौतम गणधर एक ही थे ।

6)जैन साहित्य के अनुसार गणधर इन्द्रभूति गौतम का शरीर उँचाई में सात हाथ आकार समचतुरस्य लक्षण युक्त, बल वज्र ऋषभनारायण सा मजबूत वर्ण तपाये हुए कुण्डल अथवा पद्मकमल सा गौर्य । गौतम की भव्य आकृति को देख कर मनुष्य तो क्या देव भी मोहित हो जाते हैं । गौतम बुद्ध भी प्रव्रज्जित होने के बाद जब राजगृह में प्रविष्ट हुए तो उनका देव तुल्य सौंदर्य देख कर

सारे नगरवासी चकित रह जाते हैं। इस प्रकार दोनों परम्पराओं में दोनों के देव तुल्य सौंदर्य का वर्णन दोनों के एक होने की पुष्टि करता है ।

7) महावीर से 250 वर्ष पूर्व 23वें तीर्थंकर पार्श्व नाथ हुए थे । उस समय के अधिकांश राजा एवं प्रजा यहाँ तक कि शाक्य मुनि जिनको गौतम बुद्ध कहते हैं उनके परिवार जन भी पार्श्व परम्परा के अनुयायी थे । बुद्ध चरित्र से भी यह स्पष्ट होता है कि गौतम बुद्ध बुद्धत्व प्राप्ति के पूर्व पार्श्व परम्परा से प्रभावित रहे थे ।मज्झिमनिकाय के महापरिनिर्वाणसुत्त में वह कहते हैं –सारिपुत्त , बोधि प्राप्त करने से पूर्व मैं दाढी . मूछों का लुंचन करता था। मैं खड़ा रह कर तपस्या करता था .उकडू बैठ कर तपस्या करता था। मैं नंगा रहता था । लौकिक आचारों का पालन नहीं करता था ।हथेली पर भिक्षा लेकर खाता था। ---बैठे हुए स्थान पर आकर दिये हुए अन्न को , अपने लिये तैयार किये हुए अन्न को और निमंत्रण को भी स्वीकार नहीं करता था । गर्भिणी व स्तनपान कराने वाली स्त्री से भिक्षा नहीं लेता था ।--- यह समस्त आचार जैन साधुओं का है . इससे यह प्रतीत होता है कि गौतम बुद्ध पार्श्व परम्परा का पालन करते थे। इतिहासकार राधाकुमुद मुखर्जी इस सन्दर्भ में कहते हैं – वास्तविक बात .यह ज्ञात होती है कि बुद्ध ने पहले आत्मानुभव के लिये उस काल में प्रचलित दोनो साधनाओं का अभ्यास किया , आलार और उद्रक के निर्देशानुसार ब्राह्मण मार्ग का और तब जिन मार्ग का ।-- गणधर गौतम स्वामी भी पहले वैदिक धर्म तथा यज्ञ आदि क्रिया कांड में विश्वास रखते थे बाद में महावीर के सम्पर्क में आकर जिन संस्कृति के अनुयायी बने ।

आठवीं शताब्दी मे देवसेनाचार्य ने दर्शनसार में लिखा है –

सिरीपासणाहतित्थे सरयूतीरे पलासणयरत्थो

पिहियासवस्स सिस्सो महासुदो बड्ढकित्तिमुणी

तिमिपूरणासणेहि अहिगयपवज्जाओ परिब्भट्ठो

रत्तंबर धरिता पवट्टिय तेण एयंत

मंसस्स णत्थि जीवो जहा फले दहिय-दुद्ध-सक्करए

तम्हा तं बंछित्ता तं भक्खंतो म पाविटठो ।

जैन श्रमण पिहिताश्रव ने सरयू नदी के तट पर पलाश नामक ग्राम में श्री पार्श्वनाथ के संघ में उन्हे दीक्षा दी और उनका नाम मुनि बुद्धकीर्ति रखा ।

8)त्रिपिटक साहित्य में निर्ग्रन्थ नाथ पुत्त को चतुर्यामी संवरवादी बताया गया है जो पार्श्व नाथ से संबन्धित है महावीर से नहीं । भगवान महावीर के 11 गणधरों में से 9 गणधरों का निर्वाण उनके परिनिर्वाण से पूर्व हो गया था। उनके बाद गौतम स्वामी और सुधर्मा स्वामी ही जीवित रहे । अन्य 9 गणधरों के संघ का विलय सुधर्मा स्वामी के संघ में हो गया था। प्राचीन श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार भगवान् महावीर के निर्वाण के बाद आर्य सुधर्मा को भगवान् महावीर का प्रथम पट्टधर बनाया गया । गौतम स्वामी के संघ में उनके शिष्यों के अलावा पार्श्वनाथ के संघ के साधुओं का विलय हुआ था । श्रावस्ती को बौद्घ साहित्य में गौतम बुद्ध का प्रिय स्थान माना गया है । श्रावस्ती में ही गणधर गौतम स्वामी और केशी मुनि के बीच चर्चा होने के बाद केशी मुनि का संघ महावीर के संघ में शामिल हो गया था तथा महावीर के निर्वाण के बाद गौतम स्वामी के संघ में विलय हो गया । केशी कुमार की तरह अन्य पाश्ववर्तीय मुनि कालासवेसियपुत्त ,गांगेय अनगार , पेढालपुत्त , उदक आदि भी तत्व चर्चा के बाद महावीर के संघ में आ गये जो बाद में गौतम के संघ में रहे । पार्श्व अनुयायियों का गौतम  स्वामी के संघ में सम्मिलित होने का दूरगामी प्रभाव यह हुआ कि परवर्ती काल में जब गौतम स्वामी गौतम बुद्ध के रूप में देश-देशान्तर में प्रसिद्ध हुए तो उनके चरित्र वर्णन में पार्श्वनाथ के चरित्र के कुछ वर्णन जोड़ दिये गये । उदाहरण के रूप में कमठ उपसर्ग मुचिलिंद नाग के रूप में बुद्ध चरित्र में जोड़ दिया गया । गौतम बुद्ध के साथ इस घटना क्रम का जुड़ना पार्श्व संघ से उनके सम्बन्धों को पुष्ट करता है साथ ही विभ्रान्ति भी पैदा करता है जिसके कारण गौतम बुद्ध और गणधर गौतम स्वामी को अलग अलग देखा गया । Two of eleven disciples of Mahavira survived him viz. Sudharma and Gautama. Sudharma's spiritual successors are the Jain priests, whereas the Gautam's followers are the Buddhist"---

Manmathnath Shastri, M. A., M. R. A. S., Buddha : *His life his teachings, his order, 1910* (Second edition) pp, 21-22.

9) प्राचीन बौद्ध साहित्य में जहाँ कहीं भी गौतम बुद्ध के चरित्र का वर्णन है वहां सिद्धार्थ को गौतम नाम कब दिया गया , क्यों दिया गया इसके कोई युक्ति संगत उल्लेख नहीं मिलता है । अश्वघोष के बुद्ध चरित्र में लिखा है कि उनका गोत्र गौतम था इसलिये उनको गौतम कहा गया जबकि गणधर गौतम स्वामी ही अपने गोत्र के नाम से प्रसिद्ध थे अपने वास्तविक नाम इन्द्रभूति के नाम से नहीं । भगवान महावीर भी उन्हे गौतम कह कर पुकारते थे । सिद्धार्थ का गोत्र नाम गौतम नहीं था । कई विद्वानों का मानना है कि विमाता गौतमी के नाम से उन्हे गौतम कहा जाने लगा . लेकिन यह भी तर्क संगत नहीं है । अश्वघोष के बुद्ध चरित्र में गौतम बुद्ध का गोत्र गौतम बताना एक महत्वपूर्ण प्रमाण है कि दोनो एक ही हैं। गौतम बुद्धत्व प्राप्ति के बाद सारनाथ में धर्म चक्र परिवर्तन के लिये जाते है तो रास्ते में पंच भिक्षु उनके समीप आते हैं और उन्हे गौतम के नाम से सम्बोधित करते हैं । --- बुद्ध बैठे हुए भिक्षुओं की ओर बढ़े , जिन्होने इस तरह अपने विचार स्थिर किये थे , और जैसे जैसे वह उनके समीप आते गये वैसे वैसे वे अपना निश्चय तोड़ते गये । एक ने उनका चीवर ग्रहण किया और उसी प्रकार दूसरे ने हाथ जोड़ कर उनका भिक्षा-पात्र ग्रहण किया । तीसरे ने उन्हे उचित आसन दिया, उसी तरह अन्य दो ने पाँव धोने को जल दिया । इस प्रकार उनकी अनेक प्रकार से परिचर्या करते हुए उन सबने उनसे गुरूवत व्यवहार किया किन्तु जब कि उन्होने गोत्र नाम से उन्हे पुकारना नहीं छोड़ा --- (सर्ग 15, धर्म चक्र प्रवर्तन , बुद्ध चरित्र , अश्वघोष )

राहुल जी ने भी बुद्धचर्या में लगभग इसी प्रकार का वर्णन किया है । (प्रथम धर्मोपदेश पे. न. 22 राहुल सांस्कृतायन , बुद्ध चर्या ) इन दोनो वर्णनों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि गणधर गौतम स्वामी ही बुद्धत्व प्राप्ति के बाद लोगो में गौतम बुद्ध के नाम से जाने गये । भगवान् महावीर के निर्वाण के बाद उन्होने भारत और भारत के बाहर जहाँ भी विचरण

किया वहाँ वे गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए और उन्ही गौतम बुद्ध की खोज में परवर्ती काल मे चीन से बौद्ध भिक्षु भारत आये थे ।

10) भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् गौतम स्वामी को केवल ज्ञान हुआ था । उसके बाद 12 वर्षों तक वे कहाँ कहाँ गये , कहाँ कहां उनका चातुर्मास हुआ इसका वर्णन नहीं मिलता है । श्वेताम्बर परम्परा भगवान महावीर के पाट पर सुधर्मा स्वामी को आसीन करती है , गौतम स्वामी को नहीं । दिगम्बर परम्परा गौतम स्वामी को महावीर के बाद निर्ग्रन्थ संघ का प्रमुख मानती है । जो भी हो इसमें सन्देह नहीं है कि भगवान महावीर के बाद 12 वर्षों में गौतम स्वामी के विचरण के विषय में कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं होती है । कर्नल टांड ने अपने ऐतिहासिक ग्रन्थ में लिखा है कि स्केन्डेविया में जो गौतम गये थे वो महावीर के शिष्य गौतम थे . निश्चय ही उनको कहीं से ऐसा सन्दर्भ मिला होगा और यह असंभव भी नहीं है क्यों कि महावीर के शिष्यों में गौतम स्वामी ऋद्धि- सिद्धि दायक और लब्धिमान थे । उन्होने अष्टापद की यात्रा की थी ।                    11) बुद्ध और जिन शब्द का एक ही अर्थ होता है । बुद्धत्व प्राप्ति के बाद वाराणसी जाते समय रास्ते में ऊपक आजीवक से वार्तालाप करते हुए गौतम बुद्ध ने स्वीकार किया था कि वे एक जिन हैं । -- तब भगवान् उरूवेला में इच्छानुसार विहार कर , जिधर वाराणसी है उधर चारिका के लिये निकल पड़े पक आजीवक ने देखा – भगवान् बोधि (बुद्ध गया ) और गया के बीच में जा रहे हैं । देखकर भगवान् से बोला – आयुष्मान(आबुस) तेरी इन्द्रिया प्रसन्न हैं , तेरा छवि वर्ण (काँति ) परिशुद्ध तथा उज्वल है । किसको (गुरू) मान कर हे आबुस, तू प्रवर्जित हूआ है , तेरा शास्ता (गुरू) कौन है तू किसके धर्म को मानता है । यह कहने पर भगवान् ने ऊपक आजीवक को कहा मै सबको जानने वाला , सबको पराजित करने वाला

हूँ .सभी धर्मों में निर्लेप हूं ।सर्व त्यागी हूँ , तृष्णाके क्षय से विमुक्त हूँ । मैं अपने ही जानकर उपदेश करूँगा । आयुष्मान् तू जैसा दावा करता है उससे तो अनन्त जिन हो सकता है। मेरे ऐसे ही सत्व जिन होते है जिनके आश्रव (क्लेश-

मल ) नष्ट हो गये हैं । मैंने पाप (बुरे) कर्मों को जीत लिया है इसलिये हे ऊपक मैं जिन हूँ

13) गौतम स्वामी और गौतम बुध के संदर्भ में श्रेणिक बिंबिसार के पुत्र आजात शत्रु के चरित्र से भी हमें काफी कुछ जानकारी मिलती है । जैन परंपरा जहां  उन्हें कुणिक कहती है वही बौद्ध परंपरा उन्हें अजातशत्रु कहती है । उनके जीवन की एक ऐतिहासिक घटना वैशाली गणतंत्र  की मगध पर विजय थी जिसका विवरण दोनों परंपराओं में मिलता है ।  भगवान महावीर का रक्त संबंध वैशाली गणतंत्र के संग में शामिल लिच्छवी जाति से था वही गौतम बुद्ध को भी  वैशाली बहुत प्रिय थी । अजातशत्रु वैशाली को जीता चाहता था लेकिन उसको कैसे जीता जाए इसका रास्ता उसे समझ नहीं आने पर वह खुद नहीं जाकर अपने मंत्री वस्सकार को गौतम बुद्ध के पास भेजता है तब गौतम बुद्ध वस्सकार को वज्जियों के सात अपरिहानीय नियम बताते हैं और कहते हैं कि जब तक उन पर नियमानुसार बज्जि चलते रहेंगे उनको हानि नहीं हो सकती । ये सात नियम जैन धर्म में प्रचलित थे । तब वज्जियों में फूट डालने के लिए और  उनको नियम में शिथिल करने के लिए अपने मंत्री वस्सकार को वहां भेजा जिसने कूटनीति से वज्जि संघ में फूट डाली और अजातशत्रु द्वारा वैशाली को जीता गया ।  वैशाली विजय में छद्म भाव का प्रयोग दोनों ही परंपराओं में हमें मिलता है ।औपपातिक सूत्र में प्रवतिवादुक पुरुष की नियुक्ति,सिंहासन से अभियुत्थान ,  भगवान महावीर वंदन ,से हमें अजातशत्रु की महावीर के प्रति पूर्ण आस्था व्यक्त होती है । ज्ञाता धर्म कथा के अनुसार महावीर निर्वाण के पश्चात सुधर्मा स्वामी की परिषद ने भी वह जाता था ।  गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद उनकी अस्थियों पर उसने स्तूप बनवाया क्योंकि भगवान महावीर के बाद सबसे पहले गौतम स्वामी को ही केवल ज्ञान प्राप्त हुआ और उनका निर्वाण भी उसके राज्य काल में ही हुआ था इन सभी घटनाक्रमों से यह प्रमाणित होता है कि भगवान महावीर स्वामी के साथ-साथ गौतम बुद्ध के रूप में गौतम स्वामी का भी वह  अनुगामी था ।

राजा श्रेणिक और उनके पुत्र अजातशत्रु दोनों का भगवान महावीर और गौतम बुद्ध  का अनुयाई होना इसी को प्रमाणित करता है कि गणधर गौतम ही केवल प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध कहलाए।

14
यह आश्चर्य का विषय है कि वेद वेदांत के प्रख्यात आचार्य जिन्होंने अध्ययन पूर्ण करने के बाद 5 वर्ष तक विभिन्न प्रदेशों में घूम-घूम के विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित किया हो ऐसे ख्याति प्राप्त विद्वान जिनकी यशोगाथा सभी दिशाओं में फैली हुई थी उनका वर्णन हमे बौद्ध साहित्य में गौतम स्वामी के नाम से अलग से क्यों नहीं मिलता है।
15) गौतम बुद्ध अपने निर्वाण के समय पावा से होकर कुशीनगर जाते हैं बौद्ध ग्रथों में इसी पावा को भगवान महावीर का निर्वाण क्षेत्र माना गया है । वर्तमान में जैन समाज मगध में स्थित पावा को भगवान महावीर का निर्वाण स्थल मानता है लेकिन बौद्ध ग्रथों और वर्तमान शोधों से अनेक इतिहासकार अब यह मानने लगे हैं की गोरखपुर के पास वाली पावा में ही भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। गौतम पावा से मध्यान्ह में विहार कर सायकांल में कुशीनारा पहुंच जाते हैं। गौतम बुद्ध का अपने अतिंम समय में पावा जाने का उद्देश्य भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक के दर्शन का ही हो सकता है। कल्पसूत्र में वर्णन है कि जिस रात को भगवान महावीर का परिनिर्वाण हुआ उस रात को नौ मल्ल , नौ लिच्छिवी अट्ठारह काशी कौशल के राजा पोषध में थे। इसी प्रकार गौतम स्वामी के निर्वाण के बाद उनकी अंत्येष्टि मल्ल क्षत्रियों ने संपन्न की थी क्योंकि उनका निर्वाण बुद्धत्व प्राप्ति के बाद हुआ इसलिये उन्हें गौतम बुद्ध कहा जाने लगा और परवर्ती काल में इसी नाम से वह प्रसिद्ध हो गये। •

16)  सम्राट अशोक के शिलालेख भारतीय इतिहास के आधार स्तंभ माने गए हैं । उनके लघु शिलालेख नबंर 1 में जो कि रूपनाथ , सहसाराम और वैराट में प्राप्त हुआ उसमें लिखा है – देवताओं के प्रिय इस बात को कहते हैं कि ढाई वर्ष से अधिक समय हुआ जब में उपासक हुआ था पर मैने अधिक उद्योग नहीं किया  किन्तु एक वर्ष से अधिक हुए जबसे मैं संघ में आया हूं तब से मैंने अच्छी तरह से उद्योग किया है इस बीच जो देवता सच्चे माने जाते थे वे अब झूठे सिद्ध कर दिए गये हैं . यह उद्योग का फल केवल बड़े ही लोग पा

सके ऐसा बात नहीं है क्योंकि छोटे लोग भी उद्योग करें , तो महान स्वर्ग का सुख पा सकते हैं -----यह अनुशासन मैंने उस समय लिखा ,जब बुद्ध भगवान के निर्वाण को 256 वर्ष हुये ।
बह्मगिरी सिद्धपुर व रामेश्वर से मिले शिलालेखों में भी इस बात की पुष्टि होती है। 7 सुवर्णगिरी ते अयस पुत्तस महामाताणं च वचनेन इसीलसि महामाता आरोगियं वतविया हेवं च वतविया । देवाणं पिये आणपयति ।
अधिकानि अढातियानि वय सुमि ...............दियदिय वढिसति । इयं च सावणे सावपते व्यूधने 256 ।

सुवर्णगिरी से आर्यपुत्र ( कुमार ) और महामात्यो की ओर से इसिला के महामात्यों को आरोग्य कहना और यह सूचित करना कि देवताओं के प्रिय आज्ञा देते हैं कि अढाई वर्ष से अधिक हुये ......डेढ़ गुना विस्तार होगा । यह अनुशासन (मैंने) बुद्ध के निर्वाण से 256 वें वर्ष में प्रचारित किया (सुनाया ) । अशोक के शिलालेखों से यह स्पष्ट होता है कि उसने ये शिलालेख बुदध के निर्वाण के 256 वर्ष बाद लिखवाया था । ये शिलालेख उसके सिंहासन पर बैठने के इक्कीस वर्ष बाद लिखे गये । उस समय के मान्यता प्राप्त बुद्धों में वर्द्धमान महावीर , गोशालक , सारिपुत्त , गौतमस्वामी , शाक्यमुनि , सुधर्मा स्वामी आदि थे । प्रश्न यह उठता है कि किस बुद्ध के निर्वाण के 256 वर्ष बाद ये शिलालेख लिखे गये । इतिहासकारों का मानना है कि अशोक 269 – 270 ई. पू. सिंहासन पर आसीन हुये थे । भगवान महावीर का निर्वाण 527 ई.पू. माना जाता है । उसके बारह वर्षों बाद गौतम स्वामी का 215 ई.पू. तथा सुधर्मा स्वामी का गौतम स्वामी के आठ वर्षों बाद निर्वाण हुआ माना जाता है । 270 – 21 = 249+ 256= 505 ई.पू.
सुधर्मा स्वामी का निर्वाण 507 ई.पू. में हुआ था ।

।शाक्य मुनि बुद्ध की निर्वाण तिथि का विश्लेषण कर मुनि नगराज जी तथा आचार्य हस्तिमल जी ने भगवत पुराण , वायु पुराण तथा बर्मी बौद्ध साहित्य का गहन अध्ययन कर 505 ई.पू. बताया है जो अशोक के शिलालेख में दिये गये विवरण से भी मिलता है। इसकी पुष्टि बौद्ध ग्रन्थों से भी होती है जहाँ निर्ग्रन्थ नाथ पुत्त के निर्वाण का संवाद बुद्ध को मिलने पर वे कहते हैं कि मै अभी दो वर्ष और जीउँगा तथा यहाँ निर्ग्रन्थ नाथ पुत्त का गोत्र अग्निवैशायन बताया गया है जो सुधर्मा स्वामी का गोत्र था । सुधर्मा स्वामी का निर्वाण 507 ई. पू. मे होता है और गणधर गौतम स्वामी का निर्वाण महावीर के निर्वाण के 12 वर्ष बाद हुआ था और उसके 8 वर्ष बाद सुधर्मा स्वामी का ।इसके दो वर्ष बाद शाक्य

मुनि बुद्धा का यानि 205 ई.पू. । यह तिथि अशोक के शिलालेख से भी सटीक बैठती है । यह विश्लेषण यही प्रमाणित करता है कि शाक्य मुनि को परवर्ती काल में गौतम गोत्र के कह कर उन्हे गौतम बुद्ध के नाम से  प्रचारित किया गया ।

17) अशोक के रुम्मनदेई स्तम्भ शिलालेख में हमें शाक्य मुनि का वर्णन मिलता हैलेकिन गौतम बुद्ध का वर्णन कहीं पर नहीं है ---

देवानांपियेन पियदसिन लाजिन बीसतिवसाभसितेन

अतन आगाच महोयतेहिद बुधे जाते सक्यमुनि ति

सिला बिगड़भीचा कालापितसिलाथभे च उसपापिते

हिद भगवं जाते ति (2) लुंमिनिगामे उबलिके कटे

अठभागिये च

बीस वर्षों से अभिषिक्त देवानाम प्रियदर्शी राजा द्वारा

स्वयं आकर (स्थान का ) गौरव किया गया, क्यों कि यहाँ शाक्य मुनि बुद्ध जन्म लिये थे ।

पत्थर की दृढ़ दीवारे यहाँ बनायी गयीं और शिला स्तम्भ खड़ा किया गया ।

क्यों कि भगवान् यहां उत्पन्न हुये , लुम्बिनी ग्राम(धर्म) कर से मुक्त किया गया .

और अष्टभागी बना दिया गया ।

इस शिलालेख से यह निश्चित हो जाता है कि गौतम बुद्ध और गौतम गणधर एक ही थे शाक्य मुनि अलग जिन्हे बाद में गौतम बुद्ध सजा कर प्रस्तुत किया गया ।

18)अशोक के निगली सागर स्तम्भ शिलालेख में कनक मुनि बुद्धा का वर्णन मिलता है ।

देवानंपियेन पियदसिन लारिन चोदसवसाभिसितेन

बुधस कोनाकमनस थुवे दुतियं वडिते (1)

ये कनक मुनि बुद्धा कौन थे । इतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि ये पार्श्वनाथ सम्प्रदाय की परम्परा के मुनि थे। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि अशोक के समय जो संघ का उल्लेख मिलता है वो पार्श्वपरम्परा का ही संघ था । अशोक के शिलालेखों मे आजीवको , निर्ग्रन्थो, ब्राह्मणों और संघ को दान देने का उल्लेख है  यह संघ किसका था इसका उल्लेख नही है  ।

19)  एक महत्वपूर्ण जानकारी इस विषय में पीपरवा के स्तूप से प्राप्त शिलालेख से होती है ।।यह उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर जिले में है । यह शिलालेख शाक्य मुनि के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देता है।जिसके अनुसार शाक्य मुनि का नाम सूकीर्ती था तथा गोत्र आदित्य । परवर्ती जैन साहित्य में उन्हें बुद्धकीर्ती भी कहा गया है । यह स्तूप उनके भाई बहनों द्वारा बनवाया गया । गौतम का नाम इन्द्रभूति था और गोत्र गौतम । अत़ शाक्य

मुनि को गौतम  कहना युक्ति युक्त  नही हो सकता ।

**इयं सलिलनिधने बुधसभगवते सकियनं सुकितिभतिनं सभागिणकिनं सपुत दलनम्** अर्थात् **भगवान बुद्ध के भस्मावशेष पर यह स्मारक शाक्यवंशीय सुकिति भाइयों-बहनों, बालकों और स्त्रियों ने स्थापित किया।**

जिस स्तूप में यह सन्निहित था, उसका व्यास 116 फुट और ऊँचाई 21 फुट थी।
इसकी ईटों का परिमाप 16 इंच×10 इंच है। यह परिमाण मौर्यकालीन ईटों का है।
बौद्ध किंवदन्ती है कि इस स्तूप का निर्माण शाक्यों के द्वारा किया गया था। उन्होंने गौतम बुद्ध का शरीरान्त होने पर भस्म का आठवाँ भाग प्राप्त कर उसे एक प्रस्तर भांड में रख कर एक स्तूप के अन्दर सुरक्षित कर दिया था।
कुछ विद्वानों के विचार में ये अवशेष बुद्ध के निर्वाण के प्रायः सौ वर्ष पश्चात् स्तूप में निहित किए गए थे।
यह सम्भव जान पड़ता है कि गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोदन की राजधानी कपिलवस्तु पिपरावा के समीप ही स्थित थी।
कई विद्वानों का मत है कि, बुद्ध के समकालीन मौर्य वंशीय क्षत्रियों की राजधानी 'पिप्पलिवाहन', पिपरावा के स्थान पर बसी हुई थी और पिपरावा, पिप्पलि का ही रूपान्तर है।
स्तूप के कुछ अवशेष तथा भस्मकलश लखनऊ के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

20) अंगुत्तरनिकाय व ललित विस्तार में लिखा है कि जब बुद्ध राजग्रह गये तो राजा श्रेणिक ने उनसे पूछा कि तुम कौन हो तब बुद्ध ने कहा – हे राजन यहाँ से सीधे हिमालय की तलहटी मे कौसल देश में एक जनपद है उसका गोत्र आदित्य है और जाति शाक्य  । उस कुल से , कामोपभोगों की इच्छा छोड़ मैं

परिव्राजक बन गया हूँ । यह उल्लेख भी इसी बात की पुष्टि करता है कि शाक्य मुनि को ही गणधर गौतम का रूप देकर उनको गौतम बुद्ध प्रचारित किया गया

21) काश्मीर के इतिहास पर कवि कल्हण द्वारा लिखित राजतरंगिनी जो इतिहासिक ग्रन्थों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है उसमें भी गौतम बुद्ध का जिक्र नहीं मिलता जबकि बुद्ध धर्म के सन्दर्भ मे शाक्यसिंह का वर्णन है जो इस मिथ्या भ्रम को दूर कर देता है कि गौतम गणधर और गौतम बुद्ध अलग अलग हैं ।

तदा भगवतः शाक्य सिहस्य पर निवृतेः । अस्मिन्महो लोक धातौ सार्ध वर्षशतं ह्यगात् । ( प्रथम तरंग –श्लोक-172 )

22) अपदान ग्रन्थ में शाक्य मुनि की विमाता गौतमी कहती हैं --- मैने देवदह नगर में जन्म लिया । मेरे पिता अंजन शाक्य और मेरी माता सुलक्षणा हैं। फिर मैं सयानी होने पर कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के घर गयी । यह कथन सिद्ध करता है कि शाक्य मुनि और गौतम बुद्ध अलग थे। और इस बात से यह भी स्पष्ट होता है कि शाक्य मुनि को ही गौतम बुद्ध के नाम से महावीर के प्रतिस्पर्दधि के रूप में उनके प्रभाव को गौण करने के लिये खड़ा किया गया ।

23) खारवेल के शिलालेखों में कलिंग जिन का उल्लेख मिलता है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है । चीन के इतिहास से , वैदिक पुराणों से एवं उड़ीसा के कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जगन्नाथ ( कलिंग जिन) (ऋषभदेव) की सर्वप्रथम प्रतिष्ठा उड़ीसा के सम्बलपुर मे गौतम बुद्ध द्वारा कराई गयी थी तथा उन्होने वहाँ जगन्नाथ चरित्र की रचना की थी । यही कलिंग जिन की प्रतिमा नन्द राजा द्वारा कलिंग को जीत कर मगध ले जाकर प्रतिष्ठित की गयी थी । दूसरी शताब्दी ई. पू. सम्राट खारवेल जो जैन धर्मी थे उन्होने मगध पर विजय प्राप्त कर पुनः कलिंग में प्रतिस्थापित किया था। बाद में वर्तमान जगन्नाथ मंदिर के मूलनायक के रूप में स्थापित हुए । आज भी जगन्नाथ मंदिर के अहाते में दो तीर्थंकर प्रतिमायें उत्कीर्ण परिलक्षित होती है जो यह प्रमाणित करती हैं कि पुरी के जगन्नाथ मंदिर ही कलिंग जिन का मंदिर हैँ । छटी और सातवीं शताब्दी में यहाँ जब जैनियों पर आत्याचार होने लगे तब बड़ी संख्या में जैनों ने यहाँ से पलायन किया और वे नेपाल ,तिब्बत और दक्षिण चीन में जाकर बसे । वहाँ पर अष्टापद क्षेत्र का नाम सम्भल देकर सम्भलपुर के नाम को जीवंत रखा । यही सम्भल आज पश्चिम जगत में सम्भाला के नाम से प्रसिद्ध है । गौतम स्वामी ने

जब अष्टापद की यात्रा की थी तब वहाँ कण्डरिक पुंडरिक चरित्र की रचना की थी । जगन्नाथ मंदिर में पूजा की परम्परा जैन विधि से सम्पन्न की जाती । प्रसाद बनाने में जमींकंद का प्रयोग नहीं किया जाता तथा मूँह पर कपड़ा बाँध कर प्रसाद बनाया जाता है । इससे यह स्पष्ट होता है कि आदि तीर्थंकर ऋषभदेव की प्रतिमा की प्रतिष्ठा गौतम बुद्ध जो गणधर गौतम स्वामी ही थे ने करायी थी । उन्होंने जगन्नाथ चरित्र की रचना की थी ।

24) बौद्ध साहित्य में गौतमबुद्ध से पूर्व जिन 24 थेरबुद्धों का उल्लेख मिलता है उनमें कई नाम तीर्थंकरों के हैं । दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों चीन कम्बोडिया बर्मा वियतनाम आदि मे थेर बुद्ध धर्म का प्रचलन होने के कारण तीर्थंकरों की पूजा प्रचलित है । बौद्ध धर्म में तीर्थंकरों का उल्लेख एवं उनकी उपासना यह सिद्ध करने के लिये काफी है कि बौद्ध धर्म जैन धर्म की शाखा है ।धर्मानन्द कौसम्बी के अनुसार भी बुद्ध धर्म पार्श्वनाथ संघ से निकला है ।

25) मैगस्थनीज के विवरणों में ब्राह्मणों और श्रमणों का उल्लेख है जो उस समय की प्रचलित परम्परायें थी बौद्धों का अलग से कोई वर्णन नही मिलता है । इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय बौद्ध संघ का अलग आस्तित्व नहीं था ।

26) अंगुतर निकाय के चतुक्यनिपात में लिखा है कि शाक्यमुनि के चाचा वप्पशाक्य निर्ग्रन्थ श्रावक थे । इससे यह सिद्ध होता है कि शाक्य देश में भी जैन धर्म बुद्ध के पहले प्रचलित था । जिसका प्रभाव शाक्य मुनि पर भी पड़ना स्वाभाविक था ।

27) चौथी शताब्दी ई. पू. में रचित ऋषिभाषित ग्रन्थ में 45 अर्हन्तों के विषय में वर्णन है लेकिन उसमें शाक्य मुनि का उल्लेख नहीं मिलता ना ही गौतम बुद्ध का । इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि उस समय तक बौद्ध संघ का प्रभाव ज्यादा नही था । निर्ग्रन्थ परम्परा में श्वेताम्बर और दिगम्बर भेद की उत्पत्ति ई. सन् की दूसरी शताब्दी में हुई थी । प्रभू महावीर के समय में ही अचेलकऔर सचेलक दोनो ही प्रकार के मुनि होते थे । प्रचलित परम्परा के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में अकाल पड़ने के कारण मुनियों का एक दल दक्षिण में चला गया था । बारह वर्ष बाद अकाल समाप्ति पर जब वह वापिस आया तो उन्होनें देखा कि यहाँ जो मुनि संघ था वह शिथिल हो गया था । कुछ विद्वान यहीं से मतभेद का जन्म मानते है परन्तु परवर्ती आचार्यों में ये मतभेद प्रकट नहीं होता । तब यह प्रश्न उठता है कि आचार्य स्थूलिभद्र को

आगम की वाचना क्यों करनी पड़ी और इसका प्रमुख कारण क्या था ।बारह वर्षो के बाद जब दक्षिण से जैन संघ के लोग वापिस आये तो उन्होने देखा कि अकाल के प्रभाव से शिथिल हुए पार्श्व परम्परा के मुनि जो गौतम स्वामी के संघ में शामिल हुए थे उनकी शिष्य परम्परा सुधर्मा स्वामी के संघ की शिष्य परम्परा से अलग हो गयी है । अकाल समाप्ति के बाद मूल संघ में आने की बजाय एक नया संघ बनाया । यही संघ गौतम की परम्परा का होने के कारण गौतम बुद्ध संघ कहलाया । शाक्य मुनि इसी संघ में दीक्षित हुए थे तथा उनके नेतृत्व में संघ का प्रभाव बढ़ा था इसीलिये शाक्य मुनि को ही गौतम बुद्ध कह कर महावीर के प्रतिस्पर्धी के रूप में खड़ा करने की चेष्टा की गयी । इसी समय सुधर्मा स्वामी की परम्परा के साधुओं को अनुशासन में दृढ़ रखने के लिये आचार्य स्थूलिभद्र ने आगम सूत्र की वाचना करायी । मूल परम्परा से अलग निकली परम्परा मूल परम्परा को नष्ट करके या फिर उसे बदल कर स्वयं को स्थापित करती है अतः यहाँ भी यह अपवाद नहीं है ।

28) इन सब प्रकरणों के विश्लेषण से गौतम स्वामी के चरित्र के तीन पहलू परिलक्षित होते हैं पहला वैदिक ऋषि के रूप में देश देशान्तर में उनकी विद्वता की प्रसिद्धि जहाँ वे गौतम ऋषि के नाम से जाने गये ।पुराणों के अनुसार उन्होनें कैलाश पर शिव माहेश्वर स्तोत्र की रचना की थी । उस समय प्रभू महावीर से प्रभावित होकर श्रमण दीक्षा ग्रहण कर श्रमण गौतम मुनि के रूप में महावीर के प्रथम गणधर बनते हैं वह रिदधि सिद्धि दायक एवं लब्धिवान् थे । अष्टापद कैलाश की यात्रा करके वहाँ कण्डरिक पुण्डरिक चरित्र की रचना की । यह उनके चरित्र का दूसरा पहलू हमें देखने को मिलता है । केवल ज्ञान के बाद भारत एवं भारत के बाहर गौतम बुद्ध के रूप में प्रसिद्ध हुए तब कलिंग जिन की प्रतिष्ठा कर जगन्नाथ स्तोत्र की रचना की थी यह उनके चरित्र का तीसरा पहलू था । उनके चरित्र की ये तीनो घटनाएँ आदि तीर्थंकर ऋषभदेव से एवं जिन संस्कृति से उन्हे जोड़ती हैं ।

इसी विषय पर काश्मीर के इतिहास के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है

स्कन्द पराण के अन्तर्गत श्रीमालपराण में लिखा है कि --

विप्राश्चस्त्वगृहंराजन् आगताःश्रीनिकेतने
अदृष्टमीदृशाश्चिस्मितोनानिवर्तते ॥ १२०
गौतमोपिततोराजन्गतोकाश्मिरकेततः
महावीराद्दीक्षयाचधत्तेजैनंमनेप्सितम् ॥ १२१
इदृशोगौतमोराजन्जैनधर्मोप्रवर्त्ते
श्रीमालेजैनधर्मश्चगौतमेनप्रसिद्धितः ॥ १२२

----

काश्मीर देश में भगवान् महावीर गये थे वहीं पर गौतम स्वामी ने उनसे दीक्षा ग्रहण की थी ।जैन साहित्यानुसार उनकी प्रवज्या महावीर की प्रथम देशना के बाद पावा में हुई थी । तव ये उल्लेख कैसे आया । इस विषय में यह कहा जा सकता है कि उनकी प्रारम्भिक या छोटी दीक्षा पहले हुई हो और जिन परम्परा में पूर्ण निष्णान्त होने पर काश्मीर में उनकी बड़ी दीक्षा हुई हो । यह असम्भव भी नहीं क्यों कि काश्मीर उस समय विद्धयार्जन का बहुत बढ़ा केन्द्र माना जाता था  देश विदेश से हजारों विद्यार्थी यहाँ पढ़ने के लिये आते थे ।

भगवान् महावीर की देशना से सिर्फ क्षत्रिय और अन्य जातियों के लोग ही नहीं ब्राह्मण ऋषि भी प्रभावित होकर उनके अनुयायी बनने लगे उन्हे एक नयी दिशा मिली । एक क्रान्ति सी आ गयी तब घबराकर पाखण्डी लोगो ने महावीर के प्रभाव से जनमानस को भ्रमित करने के लिये उन्ही के प्रमुख शिष्य एवं प्रथम

गणधर गौतम का नाम देकर शाक्य मुनि ( जिनका बहुत छोटा संघ था तथा जो प्रचलित जिनधर्म जो उनके परिवार का भी धर्म था उसके पालन में असमर्थ रहे ) को उनके विरोधी रूप में प्रस्तुत किया गया

श्रमण संस्कृति का वास्तविक स्वरूप जैन धर्म के रूप में आज भी भारत वर्ष में विद्यमान है जबकि भारत के बाहर यह बौद्ध धर्म के रूप में जाना जाता है जिसका प्रमुख कारण जैन धर्म के प्रभाव को कम करने के लिये जो भ्रम फैलाया गया हैं । जिसके कारण बड़े – बड़े इतिहासकार , साहित्यकार और खोजकर्त्ता भ्रमित हो गये । आश्चर्य होता है यह देख कर जब एम.ए . स्टेन .और वैलेजा जैसे खोजकर्त्ता जिन संस्कृति से अनभिज्ञ होकर जैन पुरातत्वों को बुद्ध धर्म के साथ जोड़ देते हैं । जबकि वास्तविकता कुछ और ही है जो इस कथन से परिलक्षित होती है ---

"According to the Jains, the chief disciple of their Tirthankara Mahavira, was called Gautama Swami or Gautama Indrabhuti (Ward's Hindus, p. 247 and Calebrooke's Essays, vol. II. p. 179) whose identity with Gautam Buddha was suggested by both Dr. Hamilton and Major Delamaine and was accepted by Calebrooke. This is what Calebrooke says in his Essays, vol. II. p. 276 : "In the Kalpa Sutra and in other books of the jains, the first of Mahavira's disciples in mentioned under the name of Indrabhuti, but in the inscriptions under that of Gautam Swami. The names of the other ten precisely agree. Whence it is to be concluded that Gautama, the first one of the first list, is the same with the Indrabhuti, first of the second list. It is certainly probable, as remarked by Dr. Hamilton and Major Delamaine that the Gautama of the Jains and Gautama of Buddhas is the same personage".

हजारों हजारों की सँख्या में प्राचीन जैन ग्रन्थ एवं पाण्डुलिपियां भारत के बाहर विदेशियों द्वारा ले जायी गयीं और जो उनके देशों के ग्रन्थागारों में आज भी पड़े हुए हैं उनके अध्ययन से सही तथ्यों को सामने ला कर उनके परिपेक्ष्य मे इतिहास का सही मूल्यांकन कर पुनः लिखा जाना चाहिये । इस सन्दर्भ में डा. शिवाथानु का यह कथन बहुत मायने रखता है जो उन्होंनें तात्कालीन राष्ट्रपति ड़ा. कलाम को कहा था ----According to India`s Brahmos man Dr. Shivathanu Pillai`s address to the Indian president Dr. A.P.J .Abdul

Kalam --- other countries preserve their history well . Here we need a certificate from the west to show   what is originally ours  It`s time to be proud of our heritage and rewrite the text books.

डा. लता बोथरा

## JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

**P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007**

**English :**

1. *Bhagavatī-Sūtra* - Text edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes ;
   - Vol - I (*śatakas 1 - 2*) Price : Rs. 150.00
   - Vol - II (*śatakas 3 - 6*) 150.00
   - Vol - III (*śatakas 7 - 8*) 150.00
   - Vol - IV (*śatakas 9 - 11*) ISBN : 978-81-922334-0-6 150.00
2. James Burges - *The Temples of Śatruñjaya,* 1977, pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00 [ It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]
3. P.C. Samsukha -- *Essence of Jainism* ISBN : 978-81-922334-4-4 translated by Ganesh Lalwani, Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - *Thus Sayeth Our Lord,* Price : Rs. 50.00 ISBN : 978-81-922334-7-5
5. *Verses from Cidananda* translated by Ganesh Lalwani Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - *Jainthology* ISBN : 978-81-922334-2-0 Price : Rs. 100.00
7. G. Lalwani and S. R. Banerjee- *Weber's Sacred Literature of the Jains* ISBN : 978-81-922334-3-7 Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee - *Jainism in Different States of India* ISBN : 978-81-922334-5-1 Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee - *Introducing Jainism* Price : Rs. 30.00 ISBN : 978-81-922334-6-8
10. K.C.Lalwani - *Sraman Bhagwan Mahavira* Price : Rs. 25.00
11. Smt. Lata Bothra - *The Harmony Within* Price : Rs. 100.00
12. Smt. Lata Bothra - *From Vardhamana to Mahavira* Price : Rs. 100.00
13. Smt. Lata Bothra- *An Image of Antiquity* Price : Rs. 100.00

**Hindi :**

1. Ganesh Lalwani - *Atimukta* ( 2nd edn) ISBN : 978-81-922334-1-3 translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - *Śraman Samskriti ki Kavita,* translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - *Nīlāñjanā* translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - *Candana-Mūrti,,* translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 50.00
5. Ganesh Lalwani - *Vardhamān Mahāvīr* Price : Rs. 60.00
6. Ganesh Lalwani - *Barsat kī Ek Rāt,* Price : Rs. 45.00
7. Ganesh Lalwani - *Pañcadasī* Price : Rs. 100.00
8. Rajkumari Begani - *Yado ke Aine me,* Price : Rs. 30.00
9. Prof. S. R. Banerjee - *Prakrit Vyākaraṇa Praveśikā* Price : Rs. 20.00
10. Smt. Lata Bothra - *Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra* Price : Rs. 15.00
11. Smt. Lata Bothra - *Sanskriti Ka Adi Shrot, Jain Dharm* Price : Rs. 20.00
12. Smt. Lata Bothra - *Vardhamana Kaise Bane Mahāvir* Price : Rs. 15.00
13. Smt. Lata Bothra - *Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan* Price : Rs. 10.00
14. Smt. Lata Bothra - *Bharat me Jain Dharma* Price : Rs. 100.00
15. Smt. Lata Bothra - *Aadinath Risabdav Aur Austapad* Price : Rs. 250.00 ISBN : 978-81-922334-8-2
16. Smt. Lata Bothra - *Austapad Yatra* Price : Rs. 50.00
17. Smt. Lata Bothra - *Aatm Darsan* Price : Rs. 50.00
18. Smt. Lata Bothra - *Varanbhumi Bengal* Price : Rs. 50.00 ISBN : 978-81-922334-9-9

**Bengali:**

1. Ganesh Lalwani - *Atimukta* Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - *Śraman Sanskritir Kavitā* Price : Rs. 20.00
3. Puran Chand Shymsukha - *Bhagavān Mahāvīra O Jaina Dharma.* Price : Rs. 15.00
4. Prof. Satya Ranjan Banerjee- *Praśnottare Jaina Dharma* Price : Rs. 20.00
5. Prof. Satya Ranjan Banerjee- *Mahāvīr Kathāmrita* Price : Rs. 20.00
6. Dr. Jagat Ram Bhattacharya- *Daśavaikālika sūtra* Price : Rs. 25.00
7. Sri Yudhisthir Majhi- *Sarāk Sanskriti O Puruliar Purākirti* Price : Rs. 20.00
8. Dr. Abhijit Battacharya - *Aatmjayee* Price : Rs 20.00
9. Dr Anupam Jash - *Acaryya Umasvati'r Tattvartha Sutra* (in press) ISBN : 978-93-83621-00-2

**Journals on Jainism :**

1. *Jain Journal* (ISSN : 0021 4043) A Peer Reviewed Research Quarterly
2. *Titthayara* (ISSN : 2277 7865) A Peer Reviewed Research Monthly
3. *Sraman* (ISSN : 0975 8550) A Peer Reviewed Research Monthly